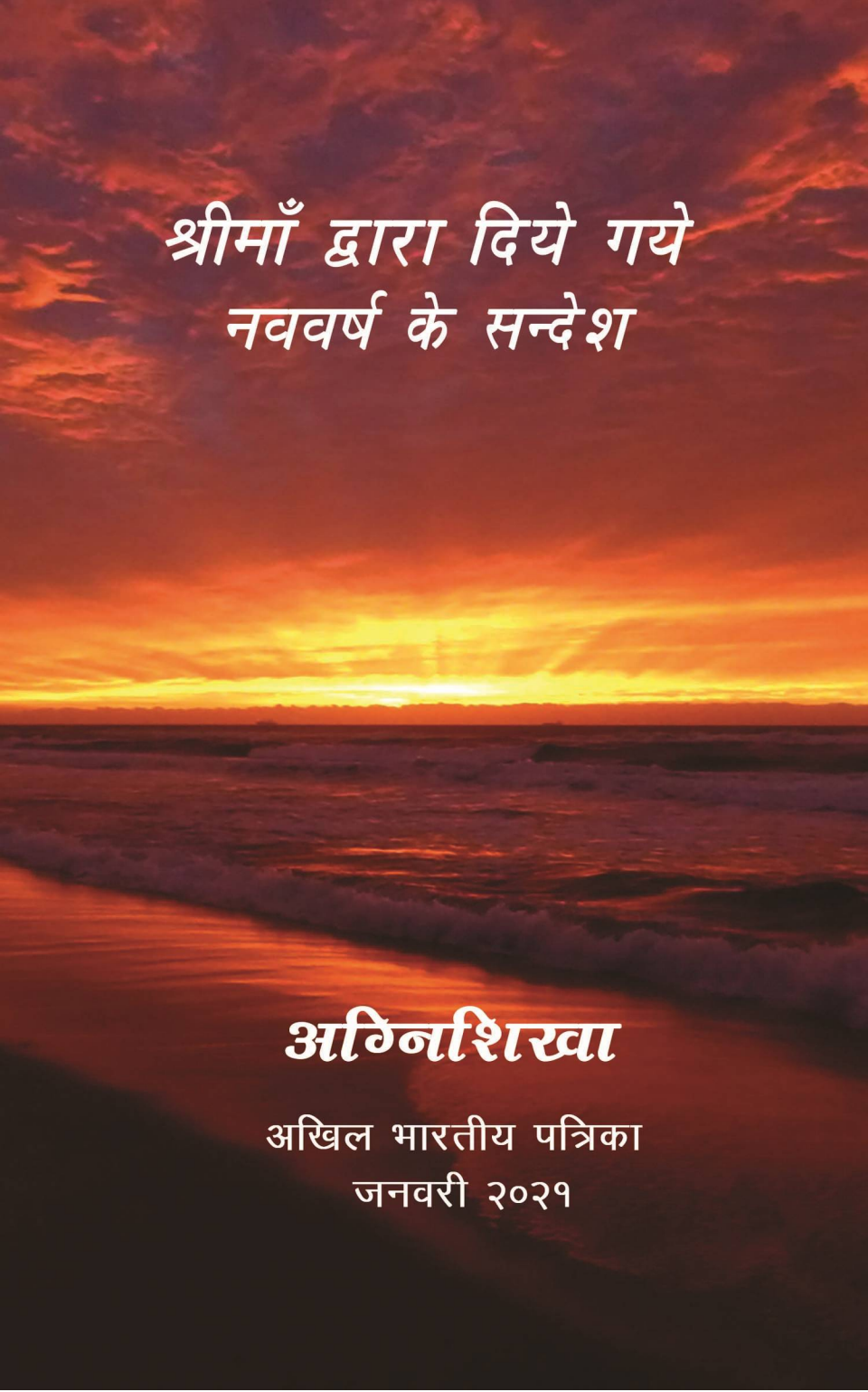

श्रीमाँ द्वारा दिये गये नववर्ष के सन्देश

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका

जनवरी २०२१

अग्निशिखा जनवरी २०२१ वर्ष ५१, अंक ६, पूर्णांक ६०५

विषय-सूची

नववर्ष के सन्देश

श्रीमाँ द्वारा दिये गये नववर्ष के सन्देश (१९४० से १९७३ तक)

सम्पादकीय टिप्पणी :

२०२० की देहलीज़ पार कर नववर्ष २०२१ आन पहुँचा...

क्या-क्या नहीं अनुभव कराया हमें २०२० ने...

हम प्रार्थना करते हैं कि यह वर्ष हम सबके लिए—समस्त धरा के चराचरों के लिए—शुभतम और कल्याणतम हो।

आइये, हम नूतन वर्ष का स्वागत श्रीमाँ द्वारा दिये गये नववर्ष के सन्देशों से करें—

नववर्ष के सभी सन्देश
श्रीमातृवाणी, खण्ड १५ से लिये गये हैं।

Bonne Année
blessings

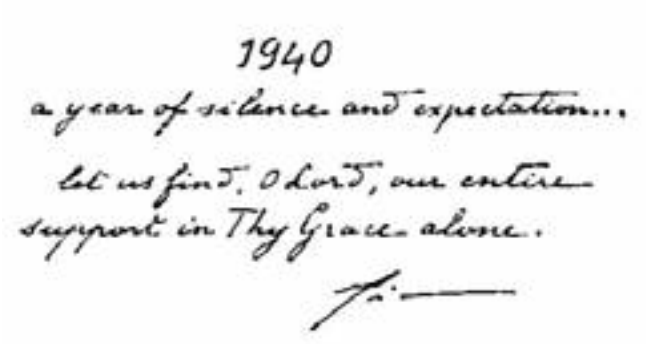

१९४०

नीरवता और प्रत्याशा का वर्ष...

भगवन्! हम एकमात्र तेरी 'कृपा' पर पूरी तरह आश्रित रहें।

दिसम्बर १९३९

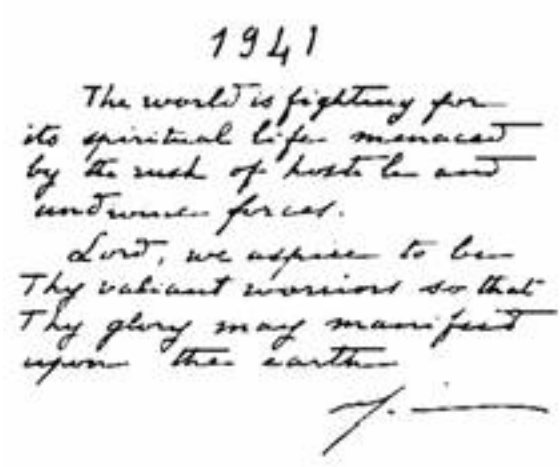

१९४१

संसार अपने आध्यात्मिक जीवन की रक्षा करने के लिए युद्ध कर रहा है जिसे विरोधी और आसुरिक शक्तियों के आक्रमण ने संकट में डाल रखा है।

हे प्रभो! हम यह अभीप्सा करते हैं कि हम तेरे वीर योद्धा बनें ताकि तेरी महिमा इस पृथ्वी पर अभिव्यक्त हो।

दिसम्बर १९४०

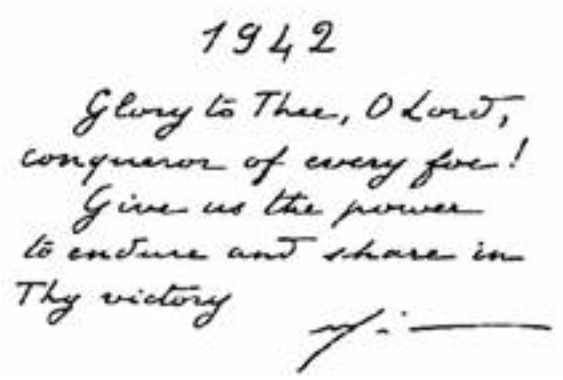

१९४२

तेरी जय हो, सब शत्रुओं पर विजय पाने वाले प्रभु! तेरी जय हो!

हमें ऐसी शक्ति दे कि हम अन्त तक अचल-अटल बने रहें और तेरी विजय में भाग ले सकें।

दिसम्बर १९४१

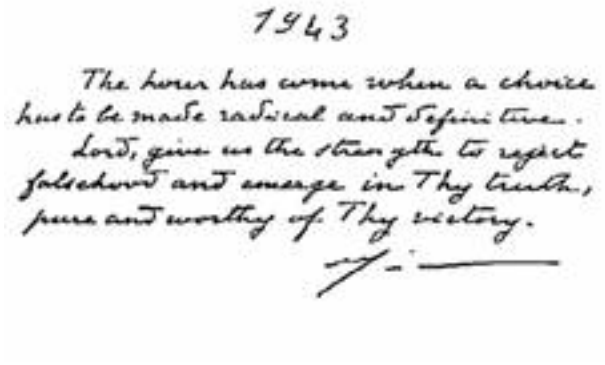

वह समय आ गया है जब हमें एक चुनाव, मौलिक और सुनिश्चित चुनाव करना होगा।

हे प्रभो! हमें ऐसी शक्ति दे कि हम मिथ्यात्व का त्याग कर सकें, पवित्र और तेरी विजय के उपयुक्त पात्र बन कर तेरे सत्य में ऊपर उठ सकें।

दिसम्बर १९४२

हे सौभाग्यवती, उतर, निज शशि-स्वर्ण चरणों को धरती पर धर
इसके धरातल को वैभव प्रदान कर जिसकी निद्रा में हम सोये हैं।
ओ मेरी सौन्दर्य की राजकुमारी, तेजस्विनी सावित्री,
ओ मेरे सुख और अपने हर्षातिरेक की बंदिनी, बाध्य होकर
मेरे जीवन के प्रांगण में, निज कक्ष और निज देवालय में प्रवेश कर।

सावित्री, ५०८

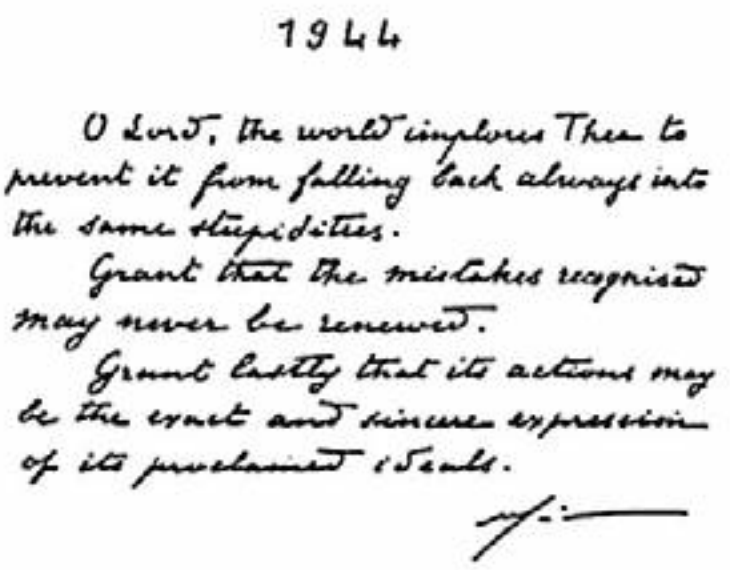

१९४४

हे प्रभो, समस्त मनुष्यजाति तुझसे प्रार्थना करती है कि तू उसे बार-बार उन्हीं मूर्खताओं में जा गिरने से बचा।

ऐसी कृपा कर कि जो भूलें पहचानी जा चुकी हैं, वे फिर से नये सिरे से दोहरायी न जायें।

अन्त में, वर दे कि मनुष्यजाति के कर्म उन आदर्शों को ठीक-ठीक और सच्चे तौर पर प्रकट करें जिनकी उसने घोषणा की है।

दिसम्बर १९४३

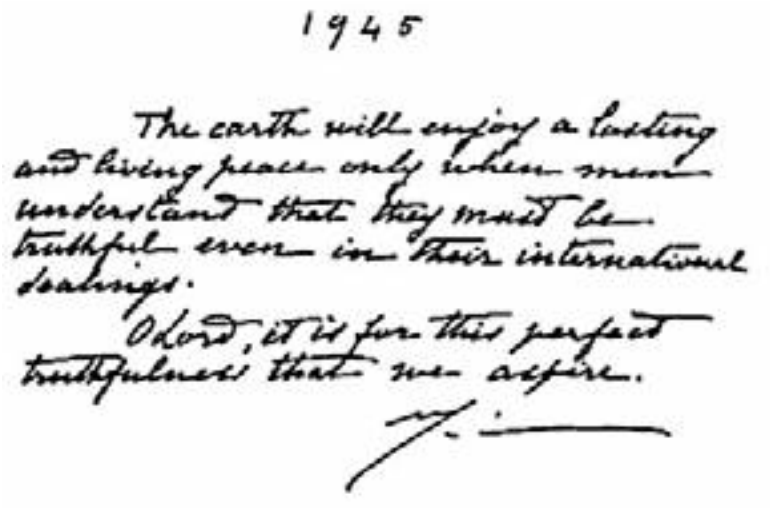

१९४५

यह पृथ्वी तब तक सजीव और स्थायी शान्ति का उपभोग नहीं कर सकती जब तक मनुष्य अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों में भी पूर्ण रूप से सत्यपरायण होना नहीं सीख लेते।

हे प्रभो! हम इसी पूर्ण सत्यपरायणता के लिए अभीप्सा करते हैं।

दिसम्बर १९४४

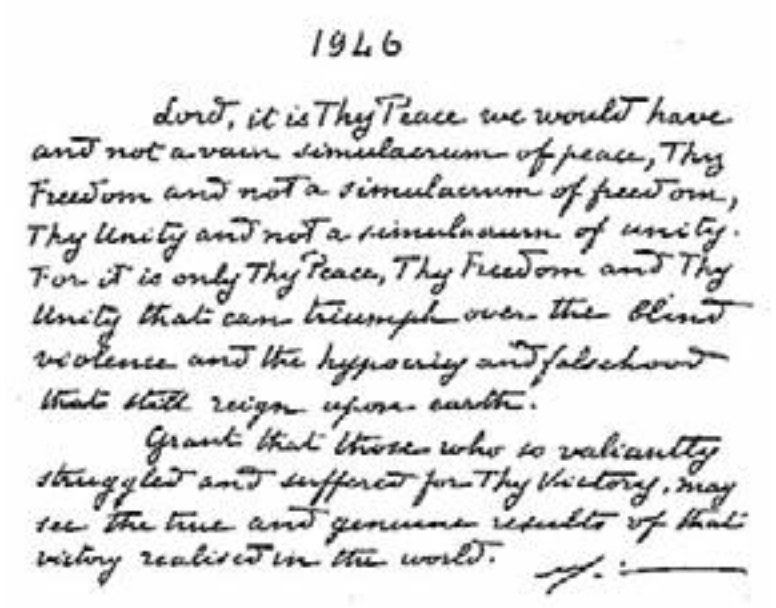
1946

Lord, it is Thy Peace we would have and not a vain simulacrum of peace, Thy Freedom and not a simulacrum of freedom, Thy Unity and not a simulacrum of unity. For it is only Thy Peace, Thy Freedom and Thy Unity that can triumph over the blind violence and the hypocrisy and falsehood that still reign upon earth.

Grant that those who so valiantly struggled and suffered for Thy Victory, may see the true and genuine results of that victory realised in the world.

१९४६

हे प्रभो! हम तेरी शान्ति चाहते हैं, शान्ति का व्यर्थ आभास नहीं; तेरी स्वतन्त्रता चाहते हैं, स्वतन्त्रता का दिखावा नहीं; तेरी एकता चाहते हैं, एकता की छायामूर्ति नहीं। कारण, एकमात्र तेरी शान्ति, तेरी स्वतन्त्रता और तेरी एकता ही उस अन्धी हिंसा, छल-कपट और मिथ्यात्व को जीत सकती है जो अभी तक पृथ्वी पर राज्य कर रहे हैं।

हे नाथ! वर दे, जिन लोगों ने तेरी विजय के लिए इतनी बहादुरी के साथ युद्ध किया है और दुःख झेला है, वे इस विजय के सच्चे और वास्तविक परिणामों को इस जगत् में चरितार्थ होते देखें।

दिसम्बर १९४५

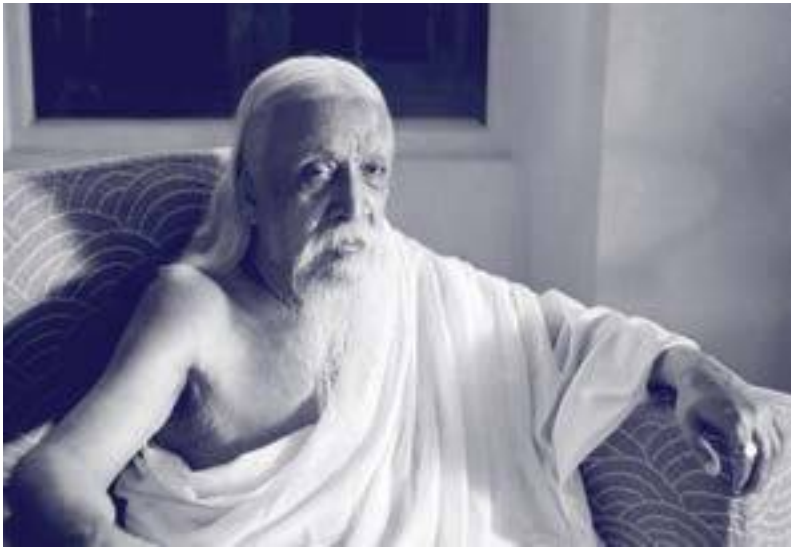

क्या विभाजित प्राणों को कर सकता है काल पुनर्युक्त ?
क्या वधित प्रेम ले सकता है देह के साथ पुनर्जन्म?
मन से अकृत, हृदय की भावनाओं से अस्वीकृत,
बोध से विस्मृत, परन्तु आत्मा में रहती है बनी स्मृति!

श्रीअरविन्द

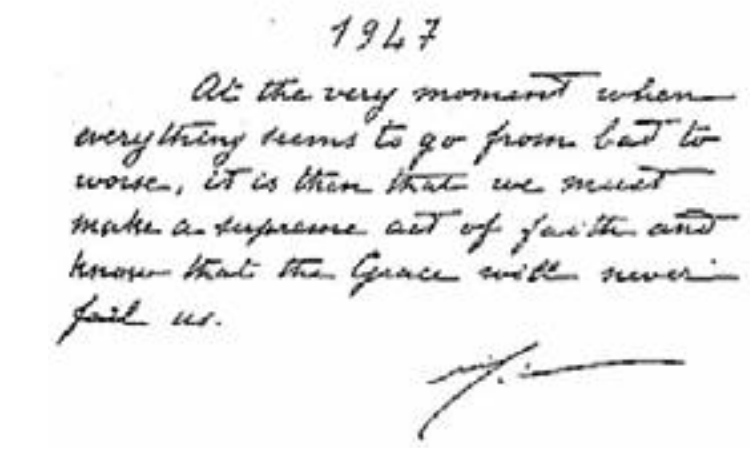

१९४७

जिस समय हर चीज़ बुरी से अधिक बुरी अवस्था की ओर जाती हुई प्रतीत होती है, ठीक उसी समय हमें अपनी महती श्रद्धा का परिचय देना चाहिये और यह जानना चाहिये कि भगवत्कृपा कभी हमारा साथ नहीं छोड़ेगी।

दिसम्बर १९४६

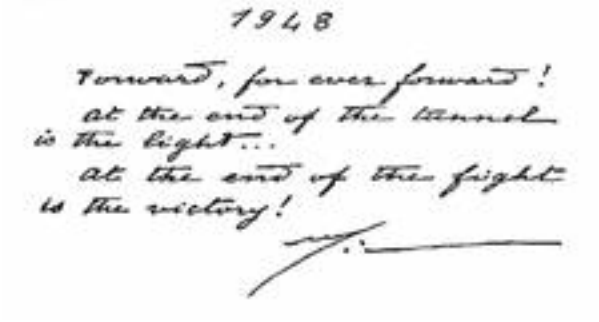

१९४८

बढ़ते चलो, निरन्तर बढ़ते चलो!
सुरंग के अन्त में है ज्योति...
युद्ध के अन्त में है विजय!

दिसम्बर १९४७

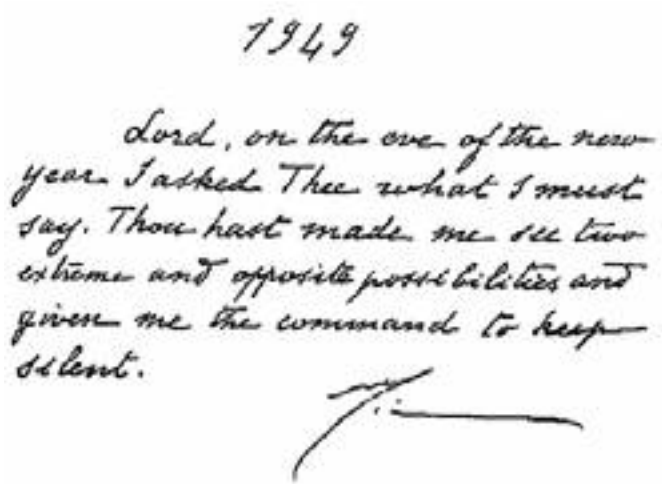

१९४९

हे नाथ, नये वर्ष से पहले की शाम को मैंने तुझसे पूछा कि मुझे क्या कहना चाहिये। तूने मुझे दो चरम सम्भावनाएँ दिखा दीं और चुप रहने का आदेश दिया।

दिसम्बर १९४८

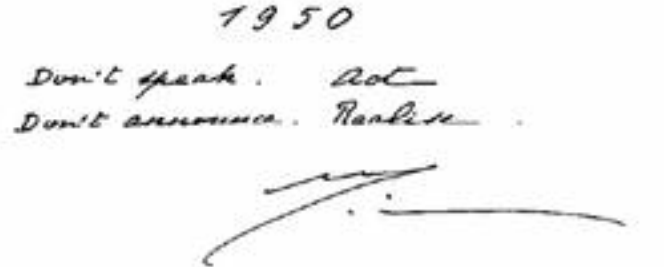

१९५०

बोलो मत, करो।
घोषणा न करो, कार्यान्वित करो।

दिसम्बर १९४९

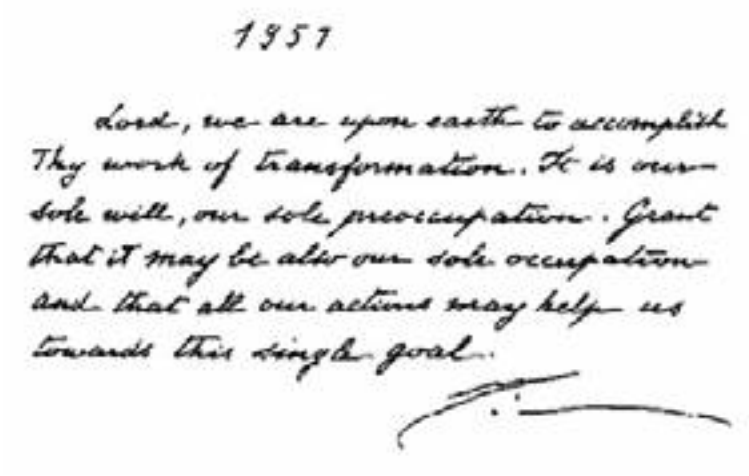

१९५१

नाथ, हम धरती पर रूपान्तर का तेरा कार्य पूरा करने के लिए हैं। यही हमारा एकमात्र संकल्प और हमारी एकमात्र धुन है। वर दे कि यही हमारा एकमात्र कार्य हो और हमारे सभी कर्म इसी एक उद्देश्य की ओर बढ़ने में सहायक हों।

दिसम्बर १९५०

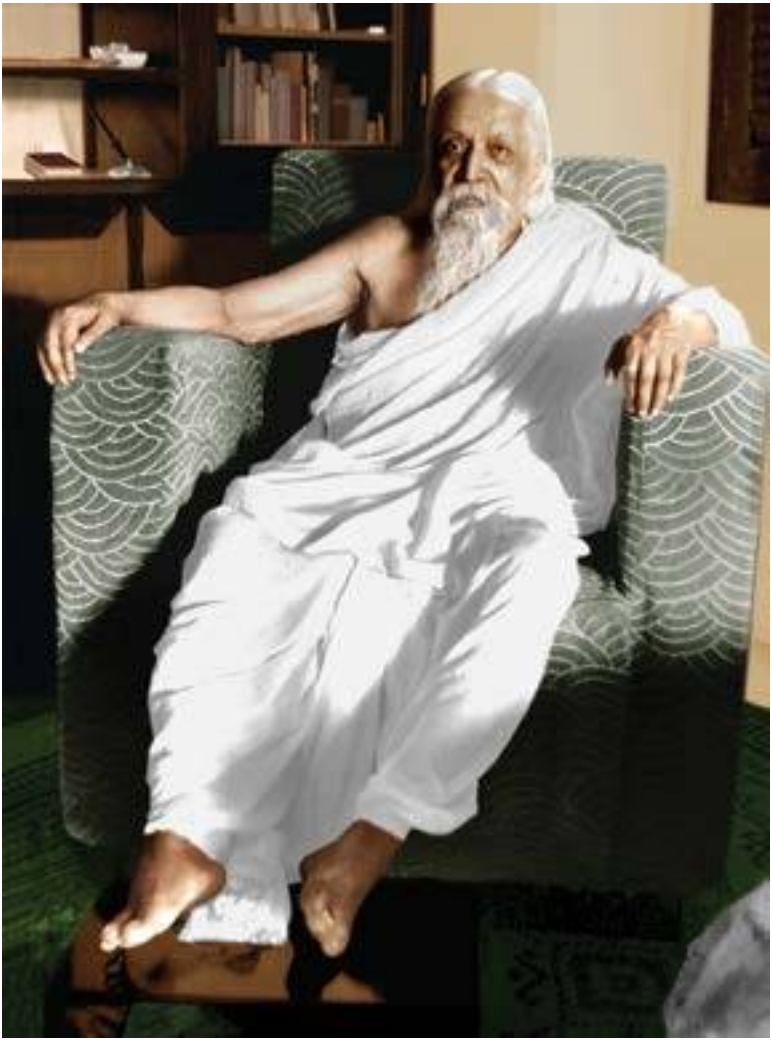

मैं निज अन्तरप्राण में सत्य-अर्थ के प्रति जाग गयी हूं
कि प्रत्येक के प्रति प्रेम और एकत्व की अनुभूति पाना ही जीवन है
और हमारे इस दिव्य रूपान्तर की यही जादुई कुंजी है,
मैं इसी सम्पूर्ण सत्य को जानती या खोजती हूँ, हे महात्मन्।

'सावित्री', पृ. ७२४ श्रीअरविन्द

१९५२

हे नाथ, तुने हमारी श्रद्धा की गुणवत्ता की परीक्षा लेने और हमारी सच्चाई को अपनी कसौटी पर परखने का निश्चय किया है। वर दे कि हम इस अग्नि-परीक्षा में से अधिक विशाल और अधिक पवित्र होकर निकलें ।

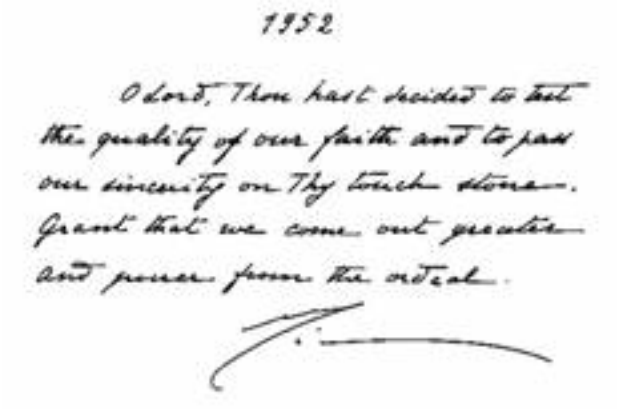

१९५३

नाथ, तूने हमसे कहा है : हार न मानो, डटे रहो। जब सब कुछ डूबता हुआ लगता है तभी सब कुछ बचा लिया जाता है।

दिसम्बर १९५२

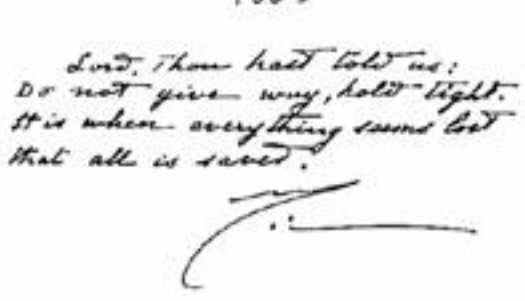

१९५४

मेरे स्वामी, इस साल के लिए सबको तुम्हारी यही सलाह है :

"किसी चीज़ के बारे में डींग न मारो। तुम्हारे कार्य ही तुम्हारे लिए बोलें।"

दिसम्बर १९५३

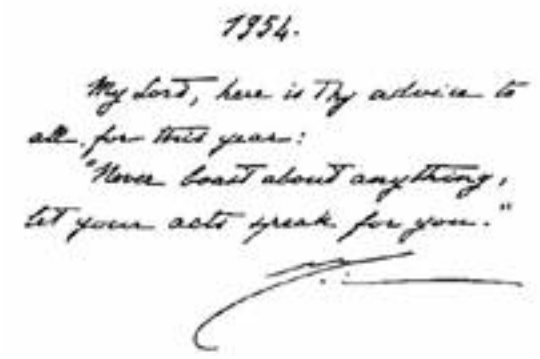

१९५५

कोई भी मानवीय संकल्प भागवत संकल्प के सामने नहीं टिक सकता। आओ, हम अपने-आपको स्वेच्छा के साथ, अनन्य भाव से भगवान् के पक्ष में रखें और, अन्त में 'विजय' निश्चित है।

दिसम्बर १९५४

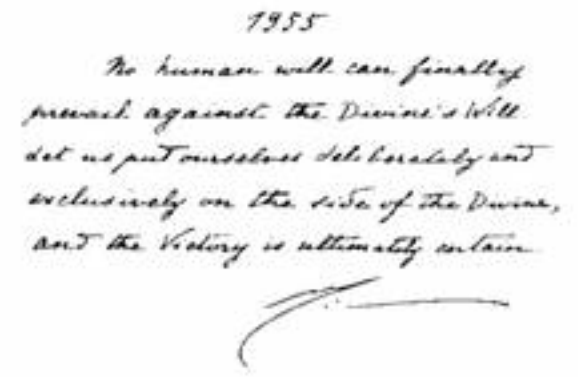

१९५६

बड़ी-से-बड़ी विजयें सबसे कम शोर मचाने वाली होती हैं।
नये जगत् के प्रकट होने की घोषणा ढोल बजा कर नहीं की जाती।

दिसम्बर १९५५

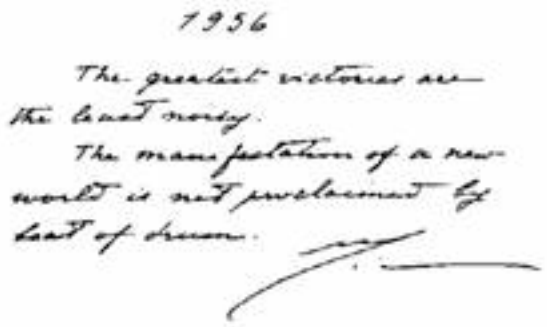

१९५७

विजय केवल वही शक्ति पा सकती है जो विरोधी अशुभ शक्ति से ज़्यादा महान् हो।

क्रूस पर चढ़ा हुआ शरीर नहीं, महामहिमान्वित शरीर ही संसार का उद्धार करेगा।

दिसम्बर १९५६

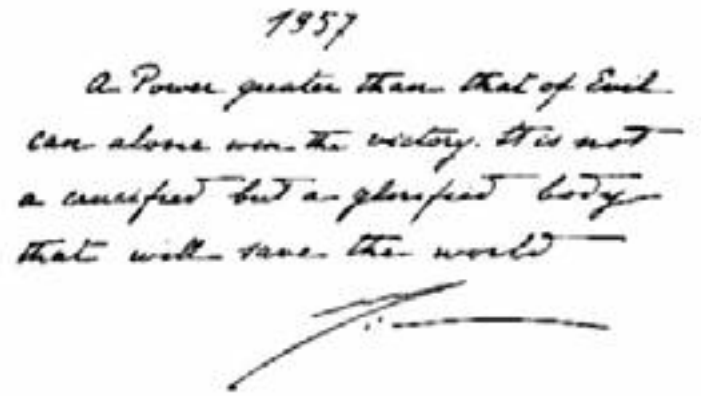

१९५८

हे प्रकृति, हमारी पार्थिव माँ! तूने कहा है कि तू सहयोग देगी और इस सहयोग की भव्य महिमा की कोई सीमा नहीं।

दिसम्बर १९५७

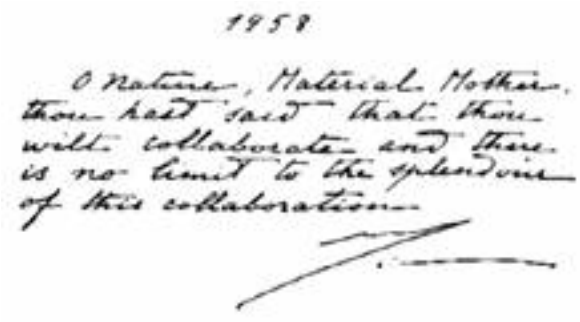

१९५९

निश्चेतना की एकदम तली में जहाँ वह बहुत कठोर, अनम्य, सँकरी और दमघोंटू है, मैं एक ऐसी सर्वसशक्त कमानी पर जा पहुँची जिसने तुरन्त मुझे निराकार, निःसीम 'बृहत्' में उछाल दिया जो एक नये जगत् के बीजों से स्पन्दित हो रहा था।

दिसम्बर १९५८

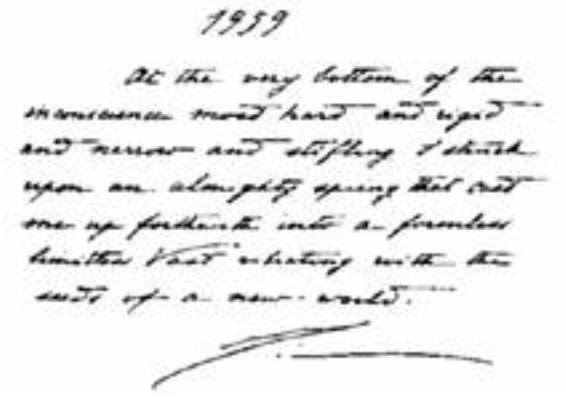

१९६०

जानना अच्छा है,
जीना और भी अच्छा है,
होना, वह सबसे अच्छा है।

दिसम्बर १९५९

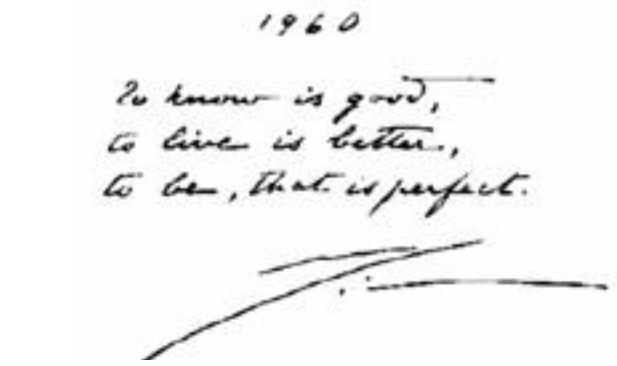

१९६१

आनन्द की यह अद्‌भुत सृष्टि, धरती पर उतरने के लिए हमारी पुकार की प्रतीक्षा में हमारे द्वारे खड़ी है...

दिसम्बर १९६०

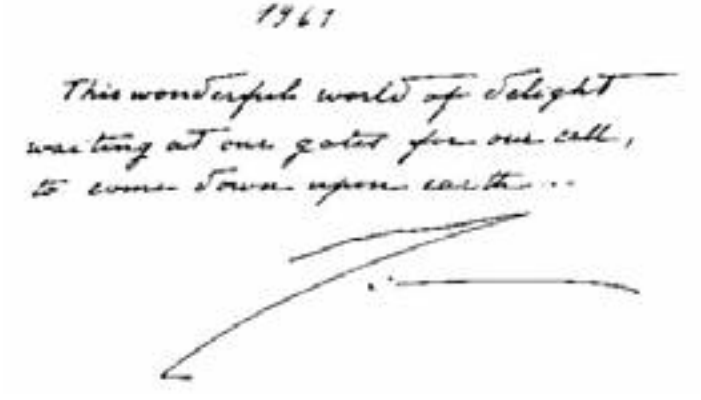

१९६२

हमें पूर्णता की प्यास है। लेकिन उस मानव पूर्णता की नहीं जो अहंकार की पूर्णता है और दिव्य पूर्णता में बाधा देती है।

लेकिन उस एकमात्र पूर्णता की जिसमें 'शाश्वत सत्य' को धरती पर प्रकट करने की शक्ति है।

दिसम्बर १९६१

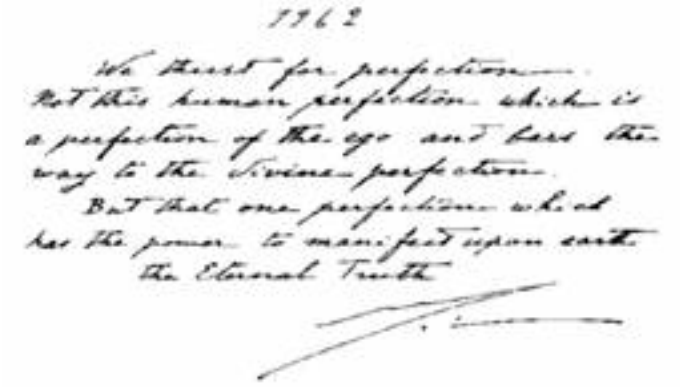

१९६३

चलो, हम भागवत मुहूर्त के लिए तैयारी करें।

दिसम्बर १९६२

१९६४

क्या तुम तैयार हो?

दिसम्बर १९६३

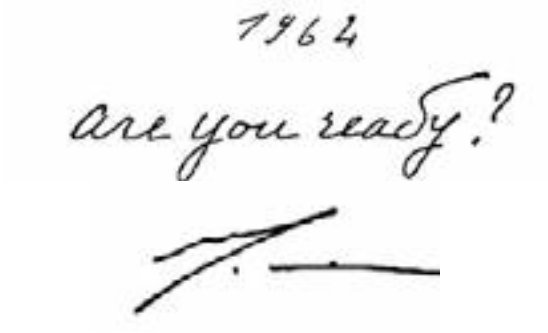

१९६५

'सत्य' के आगमन को नमस्कार।

दिसम्बर १९६४

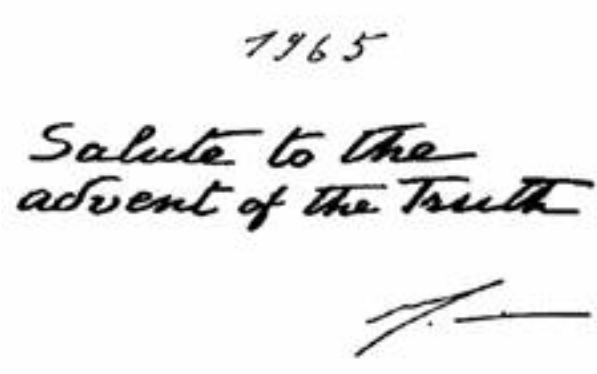

१९६६

आओ, हम 'सत्य' की सेवा करें।

दिसम्बर १९६५

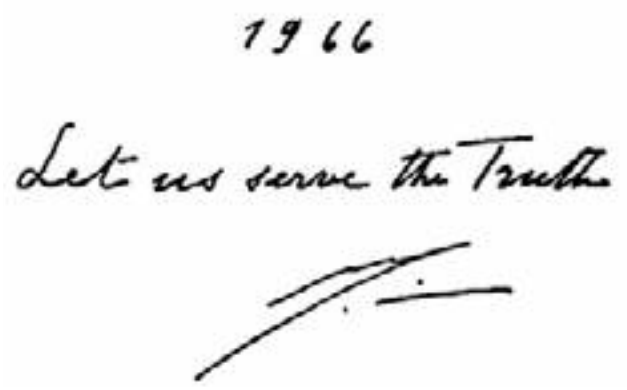

१९६७

मनुष्यो, देशो और महाद्वीपो!
चुनाव अनिवार्य है :
सत्य या फिर रसातल।

दिसम्बर १९६६

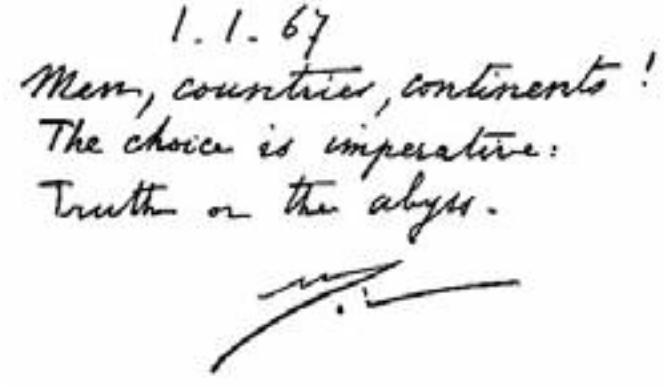

१९६८

हमेशा युवा बने रहो,
पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास कभी बन्द मत करो।

दिसम्बर १९६७

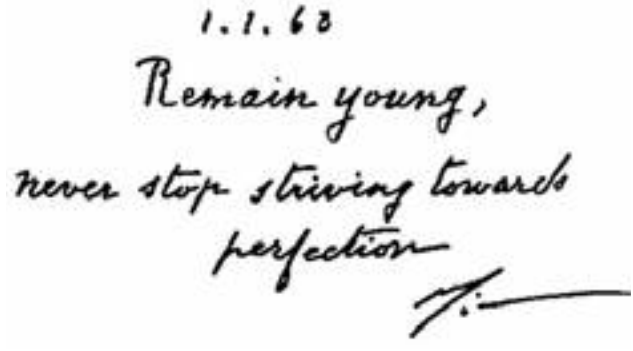

१९६९

कथनी नहीं—करनी।

दिसम्बर १९६८

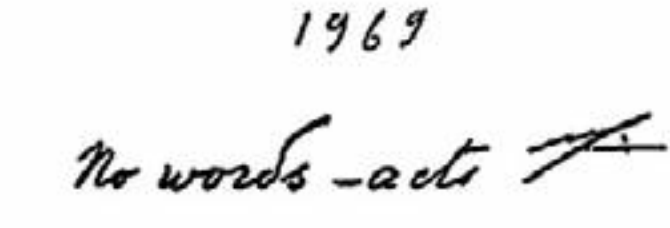

१९७०

जगत् एक बहुत बड़े परिवर्तन की तैयारी कर रहा है।
क्या तुम सहायता करोगे?

दिसम्बर १९६९

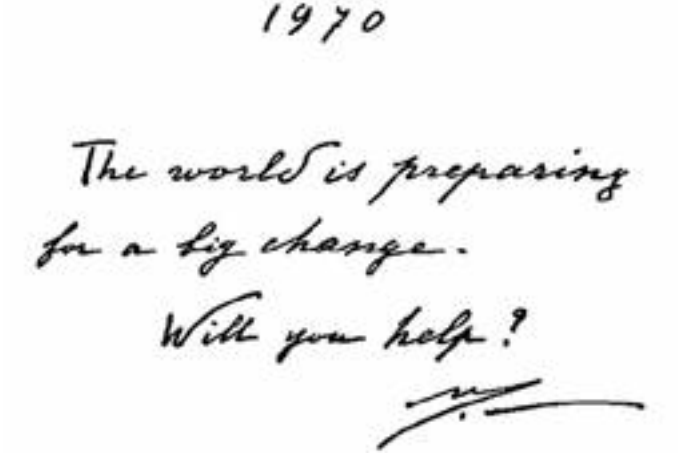

१९७१

धन्य हैं वे लोग जो भविष्य की ओर छलाँग मारते हैं।

दिसम्बर १९७०

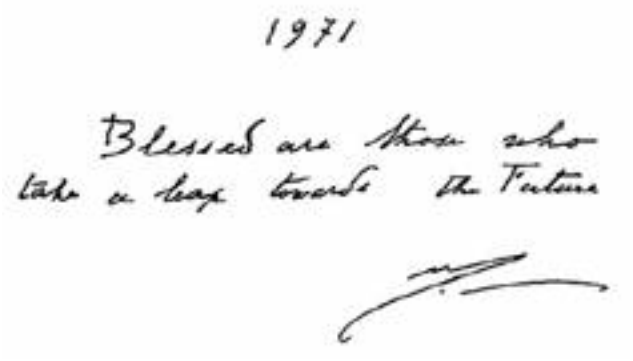

१९७२

आओ, हम सब श्रीअरविन्द की शताब्दी के योग्य बनने की कोशिश करें।

दिसम्बर १९७१

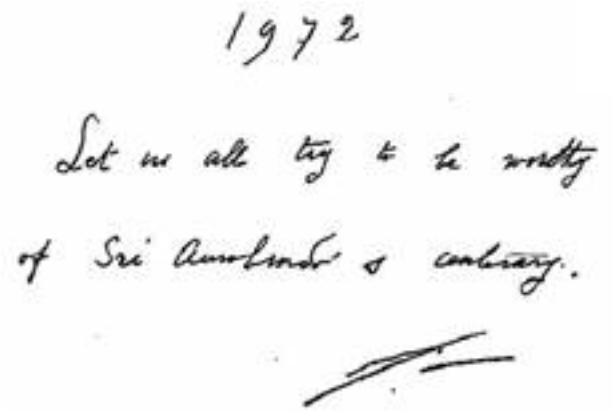

१९७३

जब तुम एक ही साथ समस्त संसार के बारे में सचेतन होते हो, तब तुम भगवान् के बारे में सचेतन हो सकते हो।

दिसम्बर १९७२

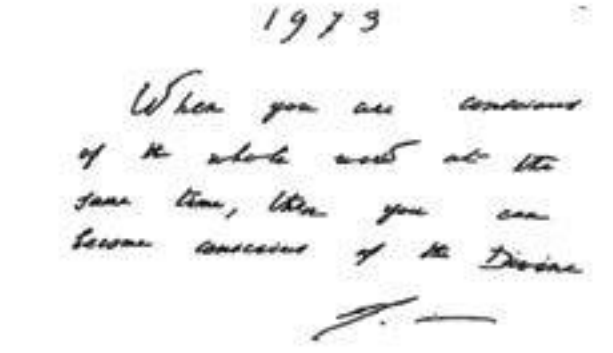

अग्निशिखा

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

वार्षिक शुल्क : एक वर्ष—१८०रु.; तीन वर्ष—५२०रु.; पाँच वर्ष—८६०रु.

संस्थापक : श्रीअरविन्द सोसायटी

मुद्रक : स्वाधीन चैटर्जी, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस

प्रकाशक : प्रदीप नारंग, श्रीअरविन्द सोसायटी

प्रकाशक स्थल : सोसायटी हाउस, ११ सैं मार्तैं स्ट्रीट, पुदुच्चेरी ६०५००१

मुद्रण-स्थल : श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, नं. ३८, गूबैर ऐवेन्यू,
पुदुच्चेरी ६०५००१, भारत

सम्पादिका : वन्दना

Registered with the Registrar of Newspapers for India: No. 18135/70

दूरभाष संख्याएँ (०४१३) २३३६३९६-९७-९८

Email: info@aurosociety.org

Website: www. aurosociety.org

Date of Publication: 1st JANUARY 2021
Rs. 30 (Monthly)

Registered: PY/47/2018-20
RNI No.18135/70

१९७३

जब तुम एक ही साथ समस्त संसार के बारे में सचेतन होते हो,
तब तुम भगवान् के बारे में सचेतन हो सकते हो।

1973

When you are conscious
of the whole world at the
same time, then you can
become conscious of the Divine

M.